अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : द्वितीय - जैन धर्म प्रवेशिका (परीक्षा 29 जुलाई, 2018)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

सावधान

1. परीक्षा में नकल नहीं करें। 2. प्रामाणिकता से परीक्षा देकर ईमानदारी का परिचय दे।
3. मायावी नहीं मेधावी बनें। 4. नकल से नहीं अकल से काम लें।

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
5. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	कुल योग
प्राप्तांक						
पूर्णांक	10	10	10	28	42	100
पुनः जाँच						

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) स्वयं ज्ञानादि पाँच आचार का पालन करते हुए, दूसरों से भी आचार धर्म का पालन कराने वाले होते हैं-

(क) आचार्य (ख) उपाध्याय

(ग) साधु (घ) अरिहंत ( )

(b) 'दग' शब्द का अर्थ है -

(क) सचित्त पानी (ख) सचित्त मिट्टी

(ग) सचित्त वनस्पति (घ) कीड़ियों का बिल ( )

(c) चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति का पाठ है -

(क) तिक्खुत्तो का पाठ (ख) ईर्यापथिक सूत्र

(ग) लोगस्स का पाठ (घ) शक्रस्तव सूत्र ( )

(d) देव, गुरु, धर्म की अविनय-आशातना करना सामायिक का कौनसा दोष है-

(क) रोष दोष (ख) संशय दोष

(ग) अविनय दोष (घ) अबहुमान दोष ( )

(e) निर्जरा के भेद हैं-

(क) 14 (ख) 04

(ग) 20 (घ) 12 ( )

(f) आकाशास्तिकाय का भेद नहीं है-

(क) स्कन्ध (ख) देश

(ग) प्रदेश (घ) परमाणु पुद्गल ( )

(g) पन्द्रहवें बोल में आत्मा के भेद बताये गये हैं-

(क) 06 (ख) 04

(ग) 08 (घ) 12 ( )

(h) प्रभु पार्श्वनाथ का पाँचवाँ भव था-

(क) हाथी का भव (ख) किरण देव विद्याधर का

(ग) अच्युत देव का (घ) प्राणत देव का ( )

(i) 'ओम शांति शांति' प्रार्थना के रचयिता हैं-

(क) आचार्य श्री हस्तीमलजी (ख) आचार्य श्री हीराचन्द्रजी

(ग) आचार्य श्री रामलालजी (घ) आचार्य श्री विजयराजजी ( )

(j) शिक्षा-प्राप्ति में सबसे बड़ा बाधक तत्त्व है-

(क) क्रोध (ख)अभिमान

(ग) प्रमाद (घ) रोग ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) गमनागमन के दोषों का शोधन ईर्यापथिक सूत्र से किया जाता है। ( )

(b) अपनी आत्मा को उत्कृष्ट बनाने के लिये कायोत्सर्ग किया जाता है। ( )

(c) दसवें तीर्थंकर का दूसरा नाम श्री पुष्पदन्तजी भी है। ( )

(d) प्रथम बार के नमोत्थुणं से सिद्धों की स्तुति की जाती है। ( )

(e) मोटन दोष का अर्थ अंग मोड़ना है। ( )

(f) रूपी पुद्गल के चार भेद होते हैं। ( )

(g) आकाशास्तिकाय का गुण पोलार गुण होता है। ( )

(h) प्रभु पार्श्वनाथ ने पोष कृष्णा एकादशी को अणगार धर्म स्वीकार किया। ( )

(i) महापापी का ग्यारहवाँ भेद बाल-हत्या करने का है। ( )

(j) यतनापूर्वक कार्य करने से पाप कर्मों का बंध होता है। ( )

प्र.3 मुझे पहचानो :- **10x1 = (10)**

(a) मैं संसार के सभी मंगलों में सर्वश्रेष्ठ मंगल हूँ। .....

(b) मैं एक प्रकार का आध्यात्मिक व्यायाम हूँ। .....

(c) मेरे द्वारा सामायिक में लगे अतिचारों की आलोचना की जाती है। .....

(d) मैं सामायिक का एक दोष हूँ, जो भविष्य के सुख की कामना करने पर लगता हूँ। .....

(e) मैं पाप तत्त्व का एक भेद हूँ, जो दूसरों की चुगली करने पर लगता हूँ। .....

(f) मैं सोलहवें बोल का 22वाँ दण्डक हूँ। .....

(g) मैं श्रावकजी का 12वाँ व्रत हूँ। .....

(h) मैंने अनेक प्रकार के रूप धारण करके प्रभु पार्श्वनाथ को कष्ट दिये। .....

(i) मैं ''जरा कर्म देख कर करिये'' प्रार्थना का रचयिता हूँ। .....

(j) मैं आश्रव द्वारों को रोकने का अमोघ उपाय हूँ। .....

प्र.4 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए। **14x2 = (28)**

(a) **निम्न शब्दों का अर्थ लिखिए-**

अव्वाबाहं ..... **अपुणरावित्ति** .....

परियाविया ..... **अभिथुआ** .....

(b) **स्वछन्द एवं संक्षेप दोष का अर्थ लिखिए।**

.....

.....

(c) **आवर्तन तीन बार क्यों किये जाते हैं ?**

.....

.....

(d) **'लोगस्स' पाठ के दूसरे क्या-क्या नाम हैं ?**

.....

.....

(e) **वंदन करने से किस गुण की प्राप्ति होती है ?**

.....

.....

(f) **नमोत्थुणं पाठ का क्या प्रयोजन है?**

.....

.....

(g) **मोक्ष तत्त्व के भेद लिखिए।**

.....

.....

(h) **तिर्यंच पंचेन्द्रिय के पाँच प्रकारों में से कोई चार प्रकार लिखिए।**

.....

.....

(i) **अंक 33 का भंग लिखिए।**

.....

.....

(j) **भगवान पार्श्वनाथ के जन्म की तिथि एवं नक्षत्र लिखिए।**

.....

.....

(k) **भगवान पार्श्वनाथ ने दीक्षा किस तिथि को ली तथा दीक्षा लेते ही कौनसे ज्ञान की प्राप्ति हुई ?**

.....

.....

(l) **''प्रातः.....कहो।'' उक्त प्रार्थना को पूर्ण करके लिखिए।**

.....

.....

(m) **ज्ञान-प्राप्ति के बाधक कारणों का उल्लेख कौनसे आगम के कौनसे अध्ययन में किया गया है ?**

.....

.....

(n) **महापापी का आठवाँ भेद लिखिए।**

.....

.....

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए : - **14x3=(42)**

(a) **पर्युपासना कितने प्रकार की होती हैं ?**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(b) **'तस्सउत्तरी' पाठ में आये हुए 'अभग्गो-अविराहिओ' का आशय स्पष्ट कीजिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(c) **कायोत्सर्ग शुद्धि-सूत्र का पाठ लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(d) **''एवं.....पसीयंतु।'' उक्त पाठ को पूर्ण करके लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(e) **सामायिक में काया के लगने वाले प्रथम छः दोष अर्थ सहित लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(f) **सामायिक से क्या-क्या लाभ हैं ?**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(g) **छोटी नवतत्त्व के 115 भेद किस प्रकार से बनते हैं ?**

.....

.....

.....

.....

.....

(h) **अकर्मभूमिज मनुष्य के 30 भेद लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(i) **अंक 13 के भंग लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(j) **भगवान पार्श्वनाथ का नाम 'पार्श्वनाथ' क्यों रखा गया ?**

.....

.....

.....

.....

(k) **भगवान पार्श्वनाथ के जीवन से मिलने वाली तीन शिक्षाएँ लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(l) **''किसी.....हजार है।'' उक्त प्रार्थना को पूर्ण करके लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(m) **'क्रोध' ज्ञान-प्राप्ति का बाधक कारण है।' इस कथन की पुष्टि कीजिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(n) **यतना के कोई तीन लाभ लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....